शोभित कुमार

जेआरएफ शोधार्थी (हिन्दी)
565 अज़ीज़गंज, शहीद भगत सिंह पार्क
गली, शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश
मोबाइल नंबर- 9956607025

1.

बहुत दिन हुए चंदा मामा
अब तो आ भी जाओ
पुए पके हैं घर में देखो
आकर खा भी जाओ

अम्मा ने लोरी गाना भी
छोड़ दिया है अब तो
बापू ने भी हाट दिखाना
बंद कर दिया अब तो

तुम आओ यदि मामा
तो अम्मा भी लोरी गाये
बापू बाबा भी कांधे पर
हाट बाट दिखलाएं

कृत्रिम दीप्ति के युग में अब
यह जीवन झुलस रहा है
मोबाइल पर आश्रित होकर
बचपन सिमट रहा है

प्रगति साथ है पर
मानवता नष्ट हुई जाती है
प्रेम और सौहार्द्र आदि सब
गमन किए जाती है.....!!

2.

बाबा! ओ कम्प्यूटर बाबा!
मुझे तनिक बतलाओ।
इतना ज्ञान कहाँ से पाया?
मुझको भी समझाओ।

जोड़-घटाना-गुना-भाग सब
तुमको तो आता है;
कैसे करते हो सवाल हल?
मुझको भी सिखालाओ।

ए बी सी डी क ख ग घ
और न जाने क्या क्या!
कैसे कैसे याद किया सब?
हमें समझ नहीं आता!

तुम ही फोटो-फिल्म दिखाकर
ज्ञान प्रदर्शित करते;
हम भी घर में कक्षा पढ़कर
मन ही मन खुश होते।

कुछ भी खोजें कुछ भी पूछे,
शोधन कर हो लाते;
अपने दृश्यपटल पर तुम ही
अखिल विश्व दर्शाते।

धरती सागर खग चौपायों
पृथ्वी अंतरिक्ष के;
भाषा कला गणित शास्त्रों के
तुम सबके कोविद हो।

तुमको लोग मशीन बुलाते
पर मशीन तुम कैसे!
तुम तो नूतन युग के उत्तम
अति उत्तम शिक्षक हो.....

3.

बाबा सड़क चली।
अम्मा सड़क चली।।
जब तक हम सब रहे जमीं पर
तब तक रही रुकी;
यह अचरज से भरी!
बाबा सड़क चली।

अम्मा सड़क चली।।

गाड़ी में जब बैठ सभी ने
खिड़की बंद करी;
घर को छोड़ चली
बाबा सड़क चली।
अम्मा सड़क चली।।

बड़ी सड़क के आते आते
पकड़ी तेज गती;
कितनी तेज चली
बाबा सड़क चली।
अम्मा सड़क चली।।

सड़क चली तो खेत चल पड़े
पेड़ बने संगी;
मेला छोड़ चली
बाबा सड़क चली।
अम्मा सड़क चली।।
नानी का घर आते आते
फिर से मंद पड़ी;
मद्धम सड़क चली
बाबा सड़क चली।
अम्मा सड़क चली।।

गाड़ी रुकी सड़क रुक गई
यह कौतुक से भरी;
देखो सड़क चली
बाबा सड़क चली।
अम्मा सड़क चली।।

बाबा अम्मा तनिक बताओ
यह कैसी मुकरी;
कैसे सड़क चली?
बाबा सड़क चली।
अम्मा सड़क चली।।

सुमति श्रीवास्तव

सुमति श्रीवास्तव
जौनपुर उत्तर प्रदेश
मोबाइल - 8887595619

एक टुकड़ा रोटी दे दो यार

एक टुकड़ा रोटी दे दो यार, आंखें धंसी रूप हो गया कुरूप।
नन्ही कोमल काया कुमहलाती भरी धूप,
किससे कहें विपद वो अपनी,
तन संग मन भी है छलनी।
चला बुझाने नन्हा दिया, पेट की अगन।
छोड खुशियां भूख ने किया मगन
आज मौत बना रही आभार, एक टुकड़ा रोटी दे दो यार।।
देख रहे सब खटते उसको, आज पुकारे जाने किसको।
नयनों में भरकर पानी, सारा जग करे मनमानी।
आंते करती बस यही पुकार, एक टुकड़ा रोटी दे दो यार।।
सांसें बस अतिथि बनी है, ये कालिमा बड़ी घनी है।
दे दो मुझे सुत की जूठन, नहीं बना है घर में भोजन।
छोड़ो सब सपने साकार, एक टुकड़ा रोटी दे दो यार।।।